Formation of different States

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-VI, Sem. – II

भारतीयों का सम्बन्ध दक्षिण - पूर्व एशिया के देशों के साथ ईसा पूर्व के कालों से ही विद्यामान था । हालाँकि इसकी शुरुआत ब्यापार हेतु नए नए मार्ग की खोज के साथ हुई। कालांतर में उन्ही मार्गों का अनुसरण अनेक भारतीय धर्म प्रचारक, शासक व अन्य नागरिकों ने किया और उन प्रदेशों का भारतीयकरण करने में सफलता प्राप्त किया, जो धीरे - धीरे राज्य के रूप में परिणत हो गया ये सभी राज्य भारतीय सभ्यता - संस्कृति का प्रतिक बनकर वर्तमान युग तक भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा की बयां करती है ।

भारतीयों द्वारा दक्षिण - पूर्व एशिया के देशों में विभिन्न राज्यों की स्थापना की गई जिसमे मुखयतः फूनान, मलाया, जावा, बोर्नियो, बाली, सुमात्रा आदि प्रदेशों में अनेक उपनिवेश शामिल है । यद्द्यपी इन सभी राज्यों की स्थापना उपनिवेश के रूप में ब्यापारिक रिश्ते कायम कर अधिक मुनाफा व सोने की प्राप्ति हेतु की गई थी, किन्तु यहाँ के वासी सभ्यता के तौर पर भारतीयों से काफी पिछड़े हुए थे । फलत: भारतीय विद्धानों ने इन्हें सभ्यता का पाठ पढाया और भारतीयों शासकों, युवराजों, आदि ने इन प्रदेशों का राजनीतिकरण कर एकता का पाठ पढाया और एक बृहत् साम्राज्य की स्थापना की। भारतीयों द्वारा दक्षिण - पूर्व एशिया के विभिन्न राज्यों को स्थापित किया जिसे निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है :-

(I) मलाया प्रायद्धीप में अनेक राज्य (उपनिवेश):- मलाया की अवस्थिति बंगाल की खाड़ी के दक्षिण - पूर्व दिशा में है और सुदूर पूर्व की ओर जाने वाली सुरक्षित मार्ग यही से होकर गुजरती थी । फलतः भारतीय ब्यापारियों को दक्षिण - पूर्व एशिया के देशों के साथ ब्यापार हेतु सर्वप्रथम मलाया पहुंचना पड़ता था। तत्पश्चात यहाँ से सुदूर पूर्व के देशों, यथा - चंपा, कम्बुज, स्याम, चीन आदि एवं मलाया प्रयद्धीप के देशों यथा - जावा, सुमात्रा आदि में जाते थे । अतः मलाया की भौगोलिक स्थिति इतनी बेहतर थी कि यहाँ से यूरोप, पश्चिम एशिया, भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में जाने का सरल एवं सुरक्षित मार्ग गुजरता था । फलतः भारतीयों ने इन प्रदेशों में अनेक ब्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की जो कालांतर में औपनिवेशिक राज्यों का रूप धारण कर लिया । इन छोटे - छोटे राज्यों का विवरण चीनी स्रोतों से स्पष्टत: ज्ञात होता है, जो निम्न है :-

(क) लंग-या-सु (अथवा लंग-गा-सु) - चीनी स्रोतों (लियांग वंश के इतिहास) से ज्ञात होता कि लंग-या-सु एक हिन्दू राज्य था, जहाँ भारतीय संस्कृति ब्याप्त थी और इसका प्रमाण उस राज्य के शासक का नाम भारतीय नाम का होना एवं उसकी राजकीय भाषा संस्कृत का होना है । चीनी यात्री ह्वेनसांग एवं इत्सिंग के यात्रा वृतांत से इस राज्य की अवस्थिति श्रीक्षेत्र (प्रौम) एवं द्वारावती (स्याम) के बीच थी । अन्य इतिहासकार यथा - पीलियो महोदय, मजुमदार महोदय आदि ने भी एस क्षेत्र को अन्य स्रोतों से अलग नाम से किन्तु, इन्ही क्षेत्रों के मध्य इसकी अवस्थिति को स्वीकार किया है । उपलब्ध स्रोतों से यह ज्ञात होता है कि यहाँ दूसरी शताब्दी के लगभग भारतीय उपनिवेश का कार्य प्रारम्भ हो चुका था । इस उपनिवेश को पूर्व का द्वार माना गया है जहाँ से सुंड और मलाया की खाड़ियो पर नियंत्रण रखा जाता था । यहाँ चन्दन और कपूर का उत्पादन होता था । भारतीय उपनिवेश बनने के बाद इस क्षेत्र पर शताब्दियों वर्ष बाद भी भारतीय सभ्यता संस्कृति की छाप पड़ी रही ।

(ख) को-लो-छो-फेन (कलशपुर) - मलाया प्रायद्वीप में इस राज्य को "किया-लो-छोपाऊ" एवं "किया-लो-छो-फ़ो" आदि अन्य नामों से भी जाना जाता है । ये सभी नाम कलशपुर के लिए ही प्रयुक्त होते है । चीनी स्रोतों एवं अरबी स्रोतों के अनुसार यह क्षेत्र ब्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसीत था । इस राज्य की अवस्थिति पन - पन के असर में स्थित तू-हो-लो से उतर में था । इस राज्य की तुलना कडाह अथवा ऋा से भी की गई है । इस राज्य में भारतीय संस्कृति की छाप दृष्टिगोचर होती है ।

(ग) पा-होआंग - चीन के प्रथम शुंग वंश के इतिहास से मलाया प्रायद्वीप में पा-होआंग नामक एक अन्य भारतीय राज्य की जानकारी प्राप्त होती है जिसे पहंग नाम से भी जाना जाता है । इस राज्य का चीनियों से मधुर सम्बन्ध था । इस राज्य के अंतिम शासक के नाम का अंतिम अंश 'वर्म' का होना इंगित करता है कि यह एक भारतीय हिन्दू राज्य था । चीनी ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि यह राज्य काफी सभ्य था ।

(घ) का-तो-ली - चीन के लियांग और प्रथम शुंग वंश के इतिहास से मलाया प्रायद्वीप के एक अन्य भारतीय हिन्दू राज्य 'का-तो-ली' का परिचय प्राप्त होता है जिसकी रीति - रिवाज एवं आचार - विचार कम्बुज एवं चम्पा के वासियों की तरह था । विदित हो की कम्बुज एवं चम्पा की स्थापना भारतीयों ने की थी एवं वहाँ पर भारतीय संस्कृति का प्रसार था । चीनी स्रोतों से ज्ञात होता है कि यह राज्य दक्षिणी सागर के एक द्वीप में स्थित था । इस राज्य के लोग रंग - बिरंगी सूती वस्त्र बनाने में दक्ष थे । इस राज्य का सम्बन्ध चीनियों के साथ मधुर था । चीनी स्रोतों से यह पता चलता है कि यहाँ के राजा भारतीय थे और यह राज्य भारतीय उपनिवेश थे, जो 5वीं शताब्दी ई. के मध्य विकास के कगार पर थे ।

(II) जावा के प्राचीन भारतीय राज्य (उपनिवेश):- मलाया प्रयद्वीप के बड़े द्वीपों में एक नाम जावा का आता है, जिसे 'यवद्वीप' के नाम से भी जाना जाता है और इसकी भौगोलिक संरचना मलाया से भिन्न है । जावा जाने के लिए सिर्फ जल मार्ग का ही प्रयोग सम्भव था । भारतीयों ने ब्यापार हेतु यहाँ से पहुचने के लिए मार्गो को खोजा था और प्रारम्भ में यह एक ब्यापारिक केन्द्र के रूप में ही विकसित हुआ, किन्तु बाद में यह एक भारतीय उपनिवेश का रूप ले लिया । यद्धपि इस द्वीप के उपनिवेशों का प्रारंभिक इतिहास अज्ञात है ।

जावा की चर्चा प्राचीन भारतीय ग्रन्थों यथा - बाल्मीकि रामायण, महाभारत, पुराणों एवं अन्य में किया गया है । प्राचीन अनुश्रुतियों के अनुसार जावा में उपनिवेशों के संस्थापक अजिशक था, जो महाभारतकालीन हस्तिनापुर के राजवंश से सम्बन्ध था । इसके अतिरिक्त अनेक अनुश्रुतियों एवं कहानियों से यह ज्ञात होता है कि जावा का भारतीयकरण करना एक महत्वपूर्ण घटना थी । चीनी साहित्यों से भी ज्ञात होता है कि जावा दूसरी शताब्दी ई. में एक हिन्दू राज्य था और चीन के साथ दूतों का आदान - प्रदान होता था ।

(III) सुमात्रा : प्राचीन भारतीय राज्य (उपनिवेश):- सुमात्रा इंडोनेशिया के अधिकृत हजारों द्वीप में सबसे बड़ा है, जो मलाया प्रयद्वीप के दक्षिण में स्थित है । इसकी भौगोलिक स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है अर्थात् यह भारत एवं चीन के मध्य में है फलतः ब्यापार हेतु भारतीयों ने यहाँ ब्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की, जो कालांतर में उपनिवेश का रूप ग्रहण कर लिया ।

सुमात्रा के भारतीय उपनिवेशों में सबसे प्रसिद्ध श्रीविजय है जिसकी स्थापना चौथी शताब्दी से पूर्व हो चुकी थी किन्तु 7वीं शताब्दी ई. में इसका उत्थान प्रारम्भ हुआ और यहाँ के शासकों ने पड़ोस के अनेक राज्यों को जीतकर एक बृहत् साम्राज्य का निर्माण किया, जिसमे प्रमुख श्रीविजय के शैलेन्द्र वंशी राजा थे । सुमात्रा से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों, यथा - बुद्ध एवं विष्णु की मूर्ति, बोधिसत्व की मूर्ति एवं अन्य देवी - देवतओं की मूर्ति आदि के आधार पर यह स्पष्ट रूप से साबित होता है कि यहाँ भारतीयों ने आकर उपनिवेश स्थापित किया और अपनी संस्कृति का प्रसार किया ।

(IV) बोर्नियो के प्राचीन भारतीय राज्य (उपनिवेश) :- बोर्नियो की भौगोलिक अवस्थिति इस प्रकार है कि इसका एक भाग मलेशिया तो दूसरा भाग इंडोनेशिया में है और यह दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों से क्षेत्रफल में बड़ा है । फलतः भारतीयों के लिए ब्यापारिक केन्द्र की स्थापना हेतु काफी महत्वपूर्ण था । अतः भारतीयों ने यहाँ के विभिन्न प्रदेशों में अपनी ब्यापारिक कन्द्रों की स्थापना की, जो कालांतर में उपनिवेश का रूप ग्रहण कर लिया ।

इन प्रदेशों में भारतीय या तो जावा से आये थे अथवा सीधे भारत से किन्तु यहाँ आकर अनेक भारतीयों बस्तियों का निर्माण किया । कोटि अथवा कूटेई जिले के मुअरा कामंग नामक

स्थान से चार अभिलेख मिले है, जो संभवतः भारतीय शासक अश्ववर्मा, जो वोर्नियो में एक वृहत् साम्राज्य का निर्माण किया था, का है और इस अभिलेख में उनके द्वारा किये गए धार्मिक कार्यों जैसे - दान एवं यज्ञ आदि का उल्लेख करता है । इसके अतिरिक्त मुअरा कामंग से अनेक मूर्तियाँ, जो हिन्दू व बौद्ध धर्म से सम्बंधित देवी - देवताओं की है, मिली है । इसके अतिरिक्त बोर्नियों में अनेक नदियों के किनारे बसे भारतीय बस्तियों का प्रमाण मिला है, जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रसार था ।

(V) बाली और सेलिबीज के भारतीय राज्य - बाली की भौगोलिक अवस्थिति यवद्वीप (जावा) के पूर्व में है और इस द्वीप को 'पूर्व का मोती' की संज्ञा से विभूषित किया गया है । यह द्वीप काफी छोटा है । यहाँ के निवासी वर्तमान समय समय में भी प्राचीन कल की तरह ही पौराणिक हिन्दू देवी - देवता की पूजा करते है । दुर्भाग्यवश बाली से अभी तक कोई भी ऐसा पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिला है जिससे वहाँ की भारतीय बस्तियां, उनके राजाओं और वहाँ भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रचार - प्रसार सम्बन्धी कोई ठोस जानकारी प्राप्त हो सके । इस प्रदेश की जानकारी सिर्फ चीनी स्रोतों से ही प्राप्त होती है । चीनी ग्रन्थों में बाली को पो-ली नाम दिया गया है ।

सेलेबीज अथवा सेलेबस बोर्नियों के पूर्व एवं फिलिपिन्स के दक्षिण में स्थित है। सेलेबीज का शाब्दिक अर्थ होता है - लौह द्वीप । भारतीय संस्कृति का प्रवेश एस क्षेत्र में संभवतः जावा से हुआ था। जावा सुमात्रा एवं भारतीय बस्तियों के निकट होने के कारण यहाँ भारतीय राज्यों की स्थापना हुई। करमा नदी के तटवर्ती सेमपात्रा से अमरावती शैली में निर्मित एक बुद्ध की मूर्ति मिली है जो प्रारंभिक गुप्तकाल (चौथी सदी) का है, जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस प्रदेश का चौथी - पांचवी सदी तक भारतीयकरण होने लगा था ।

(VI) कम्बुज में भारतीय राज्य - प्राचीन स्रोतों से यह स्पष्ट हो चुका है कि प्राचीन भारतीय ब्यापारियों ने सोने व अधिक मुनाफा प्राप्त करने हेतु नए नए मार्गो का खोज कर सुवर्णद्वीप पहुचें थे और भारतीय बस्तियों का निर्माण किये थे । इसी क्रम में वे कम्बुज गए और वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रसार किया ।

सुवर्णद्वीप के देशों में जिन भारतीय राज्यों की स्थापना हुई उनमे कम्बुज के फूनान राज्य का विशेष महत्व था । फूनान राज्य की स्थापना का श्रेय कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण को जाता है जिसका उल्लेख तीसरी शताब्दी से सातवीं शताब्दी ई. तक के चीनी ग्रन्थों में की गयी है । फूनान राज्य की राजधानी ब्याघ्रपुर जिसे शिकारियों की नगरी कहा जाता था । कौण्डिन्य ने फूनान राज्य असभ्य जनता को सभ्यता का पाठ पढाया और वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रसार किया । चौथी शताब्दी तक कम्बुज का भारतीयकरण हो गया था और यहाँ नदियों के किनारे एवं अनेक स्थानों तक अनेक भारतीय बस्तियाँ बस चुकी थी ।

(VII) सियाम में भारतीय राज्य - सियाम की भौगोलिक स्थिति बरमा से पूर्व और कम्बोडिया के पश्चिम में है । एस प्रदेश को प्राचीन भारतीय सुवर्णभूमि कहते थे एवं ब्यापार के सिलसिला में इन प्रदेशों में अनेक भारतीय उपनिवेशों की स्थापना कर इसका भारतीयकरण कर दिया वास्तव में यहाँ 13वीं सदी से पूर्व हिन्दू पौराणिक संस्कृति का प्रसार था । दुर्भाग्यवश सियाम के भारतीय उपनिवेश (राज्य) ज्यादा समय तक स्वतंत्र नहीं रह सके और वें शक्तिशाली कम्बुज के भारतीय राज्यों के आधीन हो गए । सियाम के भारतीय राज्यों में मुख्य राज्य द्वारवती था जिसकी राजधानी लवपुरी (लोपपुरी) था । इसके अतिरिक्त उतरी सियाम में हरिपंज्य नामक भारतीय राज्य था जिसकी स्थापना ऋषि वासुदेव ने 7वीं शताब्दी ई. में किया था ।

(VIII) बरमा में भारतीय राज्य - बरमा सुवर्ण भूमि का एक राज्य था जहाँ भारतीयों ने ब्यापार हेतु सर्वप्रथम प्रवेश किया एवं अनेक ब्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की, जो कालांतर में राज्यों का रूप धारण कर लिया । इन क्षेत्रों में राजकुमार अभिराज ने अपनी सेना के साथ एक राज्य की स्थापना की जिसका नाम संकिस्सा (तंगौर) था, और उसे अपनी राजधानी भी बनाया । तत्पश्चात पुनः अराकान नगर की स्थापना की । कालांतर में भी बरमा में अनेक भारतीय उपनिवेशों की स्थापना हुई।

निष्कर्ष :- उपयुक्त वृतांत के आधार पर स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय ब्यापारियो ने ब्यापार हेतु दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में अनेक ब्यापारिक केन्द्रों का निर्माण किया, जो समय के साथ छोटे - छोटे राज्यों का रूप धारण करता गया इन राज्यों में धर्म प्रचारकों व अनेक विद्वानों के आवागमन से सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार किया; एवं शासक वर्गों के द्वारा इन सभी प्रदेशों का एकीकरण कर एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया गया । हालाँकि एक महत्वपूर्ण बात यह भी रही कि इन उपनिवेशवादियों को संस्कृति प्रसार के क्रम में कोई विरोध का सामना नहीं करना पड़ा और इन सभी प्रदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार बिना रोक - टोक होता गया । यद्धपि वर्तमान युग में इनके अधिकांश प्रदेशों पर दुसरे धर्मों (विशेषतया इस्लाम) का अधिकार है इसके वावजूद इन प्रदेशों में पौराणिक हिन्दू धर्म व उसके मान्यताओं का स्वरुप दृष्टिगोचर होता है ।